Appendix 01

Metres employed in *Bhuśuṇḍīrāmāyaṇam*

(०१) अनुष्टुभ् - श्लोकेषष्ठं गुरु ज्ञेयं लघु पञ्चमम्।
द्विचतु:पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो: ॥

Note: The BhR is composed mainly in the *Anustuḅh* metre. Hence the number of the verses in the *Anustuḅh* are not given here.

The numbers of other metres are given here below.

(०२) अपरवक्त्र:- अयुजि ननरला गुरु: समेतदपरवक्त्रमिदं नजौजरौ विषम।
दक्षिणखण्ड 235:24 (= 01)

इति वदति रघूद्वहे कपीन्द्रा: सरभसमेत्य तत: प्रभुं प्रणेमु:।
अवनतवदना: प्रभूतलज्जावशविवशार्त्तहृदश्चिराय तस्थु:।। ०१/२३५/२४।।

(०३) आर्या:- यस्या: प्रथमे पादे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादशा द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या।।

पूर्वखण्ड- 26: 27

अयि सुन्दर राघवोत्तम त्वमसि प्रेमरैकभाजनम्।
वनिता: स्मरबाणवेपिता: सदय त्वं परिपालय प्रभो भु.रा. ०१/२६/२७।।

(०४) इन्द्रवज्रा - स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग:।

पूर्वखण्ड- 49: 33, 42, 54/ 50:08, 10/ 118:06/ 134:33/ 137:13 (= 08).

दक्षिणखण्ड- 03:52/ 04:45/ 94:68-70/ 95:40, 41, 43, 46/ 104:30/ 106(II): 30-34/ 107:28, 31/ 115: 21, 22/ 120: 21/ 122: 27/ 125:26/ 126: 6, 7, 9, 11, 13, 25, 30-34/ 129: 4, 14/ 130: 12, 13/ 131: 4, 26/ 142: 35/ 144: 34, 36, 39, 64/ 156: 16/ 166: 28/ 172: 49,51/ 173: 25/ 184:35/ 196: 29/ 201:29/ 207:26/ 210:36 (= 54).

(०५) इन्द्रवंशा :-

पूर्वखण्ड - 49:53/ 139:27-29/ 141:54, 91, 92/ 142:32, 33, 35-46, 50-52, 56, 123, 131, 207, 208, 279/ 143:28, 32, 36, 62, 68, 69, 76, 83, 92/ 144: 31, 63, 83/ 145: 11, 88, 108, 112, 114, 126/ 146: 26, 27 (= 49).

दक्षिणखण्ड - 6:104, 105/ 8:122/ 9:112/ 12:63/ 13:115/ 14:50, 51/ 15:53, 55, 57/ 17:22/ 53:34, 44/ 61:34, 38, 36/ 74:3, 29/ 79:22, 25/ 85:40/ 86:14/

104:19, 21/ 120:2/ 126:15-17/ 131:5, 7, 21/ 142:15-18, 25 143: 5, 10/ 144:59/ 172:20 (= 43).

(०६) उपजाति - अनन्तरादीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ता।

गुञ्जास्रजः केकिपिच्छावतंसः
करे रसाला मुरली यदा स्यात्।
गोपाङ्गनाश्चेद्विलसन्ति पार्श्वे
सीतापते त्वां प्रणमामि नित्यम्।।०१/०५/१९।।

पूर्वखण्ड - 5:19, 22/ 7:1-7, 9-11/8:6/ 9:9-10/ 10:41-46/ 12:1-6, 17, 32/ 16:22-24/ 17:24-30[1], 33[2], 34[3]/18:4[4], 8, 9, 11, 15, 19, 24, 25/ 19:1,11, 12, 45, 46, 47/ 20:45-47/ 21:22, 39-43, 48, 56/ 22:28, 29, 38/ 23:8, 16/ 24:4/ 32:55, 56, 59, 60, 74, 75/ 34:48-52/ 35:1, 2, 4-6, 14/ 36:1, 29/ 37:1-2/ 39:3,4,17,18,20-23/ 40:18-23, 42/ 48:50/ 49:2, 58/ 50:4-6, 9, 11, 20, 25, 25, 27/ 53:43/ 54:10-12/56:39, 40/ 59:43/60:20, 23-29/ 61:15/ 62:17, 25/ 63:21/ 64:6,7/ 65:1-6, 13, 30/ 66:7, 10-16, 20, 27, 28/67:8-11/ 70:24-27, 34, 36, 37/ 71/3,4,14,15/ 72:20/ 73:19-24/74:1, 6, 14-19/ 75:5-9, 14, 18, 19/77:30, 31, 36/ 80:11/ 81:13/ 82:32-35/ 83:7, 20, 23/ 84:7, 8, 31, 34/ 86:1-3, 6/ 88:1-17, 23, 25/ 89:20/ 90:26/ 91:6-9, 14 15/ 92:22, 70-73/ 93:1, 37, 56/ 95:3, 56/95:3, 55/ 96:53-57, 113, 114/ 97:64, 66, 90-99, 117, 118, 130, 131, 202-217, 231-234/ 98:47, 118, 119, 134, 135, 160-162, 174, 215-221/ 99:2-25, 27, 32-36, 38, 55-57, 77-80, 83-88, 91-93, 97, 110, 114, 125-127/ 100:48-50, 72, 75, 78, 79, 87/ 101:15, 16, 24-27/ 102:25, 31, 36, 38-40/ 103:336/104:74-80, 82, 102/ 105:51, 52, 67, 109/ 106:18-20, 78-80/ 107: 57,59, 120-136, 160, 178, 180, 182/ 108:1, 2-14, 18-38, 40, 50-64, 89-91/ 109: 28, 29, 53-55, 60-63, 67, 68, 73-75, 79, 81, 82, 97, 132, 194-200, 202, 204, 205/ 110:109-111, 211, 220-222, 232, 244, 275, 282, 407-410/ 111:10-13, 21/ 112:46-52, 58/ 113:127, 172, 173/ 114:50, 170/ 115:32, 35-39, 41, 55/ 116:13-15, 36, 40, 49/ 117: 8, 10, 18-20, 22, 33, 46, 47, 53/ 118:43, 44, 52, 56, 61/ 119:21, 47, 79, 83-84, 99, 102/ 120:102-104, 142-145/ 121:41, 45, 46/ 122:5, 10, 33, 34, 80, 94-97, 103/ 123:76, 79-80, 86, 87, 99/ 124:1, 10, 43, 52, 53/ 127:52, 100, 103-107, 114/ 128:10, 29, 30, 44, 51, 53, 62-64/ 129:81/ 130:35-38, 49-51, 58, 92-103, 157-159, 163, 164/ 132:69, 72/ 133:24, 55, 56/ 135:17/ 136:18, 23, 27, 37, 42/ 137:;7, 29, 131, 133, 149, 158/ 138:3, 16, 48, 54, 69, 98-105/ 139:30, 33, 34, 101/ 140:24, 108, 169/ 141:34-40, 45/ 142:26, 132/ 143:27, 37, 57-61, 88/ 144: 21, 22/ 145:135, 137, 156-157/ 146:42, 56, 57, 88 (= 733).

[1] Upajāti of 14.12.12.13.
[2] Upajāti of 12.14.11.12.
[3] Upajāti of 13.13.13.11.
[4] Upajāti of 11.12.11.12.

दक्षिणखण्ड – 2:23, 26, 27/ 3:1, 13, 14, 19-21, 51/ 4:11, 47, 48, 74, 81, 83, 85, 87-89/ 5:4, 39, 40, 42/ 7:37/ 8:34, 51, 53, 82, 86, 112/ 9:216/ 15:56/ 17:24/ 22:35/ 24:66/ 25:36-43, 49-51, 55, 60, 61, 85/ 25:65/ 28:78/39:38/ 42:51/ 49:36-56/ 53:30, 33/ 55:39, 40/ 59:36/ 61: 32, 38, 43/ 62:7/ 67:15, 16/ 72:20/ 75:1/ 77:1/ 79:29/ 90:10, 23, 27, 28/ 93:61, 73/ 95:63, 78, 80, 87/ 104:32-34/ 106(I):41/ 107:15-23, 25-27, 29, 30, 32, 41/ 109:3/ 110:24-26, 28-35/ 112:3, 35/ 115:14/ 119:9, 10, 14/ 120:10-13/ 123:26/ 125:10, 11, 16, 17, 18, 27, 28/ 126:35, 36, 38-44/ 129:3, 5, 6, 16-18, 41/ 133:24-32/ 134:41/ 137:30/ 142:33, 34,/143: 24-29, 31, 33/ 144:11, 26-28, 40, 41, 63/ 145:1-12, 31/ 149:59/ 150:68/ 154:16, 17, 25, 32/ 155:20, 21/ 159:30, 31/ 161:56-62/ 164:33/ 167:12, 14/ 168:31/ 169:35/ 170:25-27/ 177:23/ 179:49, 50/ 180:25/ 188:33/ 197:18-20/ 199:19/11/ 200:11/ 202:1, 20, 21/ 203:39/ 206:39/ 207:25, 27-30/ 209:73-82/ 210:29, 30, 37/ 213:31/ 216:27/ 218:25/ 220:45, 50/ 221/46/ 222:31/ 224:27-29/ 227:58, 59/ 231:22-24/ 232:16/ 235:15/ 236:29/ 237:58-60(= 218).

(०७) उपेन्द्रवज्रा - उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा। (सा i.e. इन्द्रवज्रा)

द्वयोर्द्वयोर्मध्यगतो विलासी
रेजे प्रियास्कन्धगोर्ध्वबाहुः।
तास्त्वेकहस्तं दिवि नर्तयन्त्यः
प्रियस्य नाभौ चलदन्यहस्ताः।। ०१/१३०/१७०।।

पूर्वखण्ड – 130: 170 (= 01).

दक्षिणखण्ड – 84:24/ 93:60, 62-66, 69, 70/ 94:26, 38, 59, 60/ 95:39, 42, 44, 45/ 104:29, 31/ 108:25/ 110:27/ 111:31/ 120:23/ 124:25/ 125:29/ 126:5, 37/ 129:15/ 143:30, 32/ 155:37/ 156:21/ 157:24/ 161:25/ 163:67/ 167:1 (= 36).

(०८) औपच्छन्दसिक– पयन्ते यौं तथैव शेषमौच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्।

कुसुमितमखिलं निरीक्ष्य देवी, प्रमुदवन सहजेश्वरी प्रसन्ना।
सदृशतमवयभिरालिभिः सा हृदयचमीकरदात्मना विहर्त्तम्।। ०१/१२०/१०५।।

पूर्वखण्ड – 120:105/ 121:50-52/ 122:49/ 123:81/ (= 06).

दक्षिणखण्ड – 119:1/ 22:33/ 109:27/ 115:20/ 126:3, 4/ 131:27/ 144:57/ 153:29/ 171:25 (= 10)

(०९) तोटक– वद तोटकमब्धिसकारयुतम्।

इति मे मतिरस्ति भृशंसुदृढा यमुनोजलवीचिविलोलमरुत्।
तटकुञ्जकुटीरगृहं भजतो न रमापतिधाम मुदे मनसः।। ०१/१४५/७२।।

पूर्वखण्ड – 145:72 (= 01)

दक्षिणखण्ड – 22:32/ 105:4-15 (= 13)

(१०) द्रुतविलम्बितम् –द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।

कटुरटन्ति च संप्रति फरवाः
सुकलहंसरवश्च तिरोहितः।
श्रवणयोः कुरुते कटुतामसौ
किमपि धूकवधू निवहारवः।। ०१/२८/५।।

पूर्वखण्ड – 28:5-20/114:23/116:26/ 117:59/ 119:15/ 125:112, 113 (= 22)

दक्षिणखण्ड – 5:25-28/ 220:20 (= 05)

(११) नर्दटक– यदिभवतो नजौ भजजला गुरु नर्दकम्।
इति बहुविक्लवातुरहृदो व्रजवामदृशः
प्रसभतरं विलप्य करुणास्मरबाणरुजा।
वत वत संभ्रमेण बहुवीक्षितशून्यदृशः
सुभगतरस्वरेण रुरुदुर्विजने विपिने।। ०१/३३/४०।।

पूर्वखण्ड – 33:40/ 145:152 (= 02)

दक्षिणखण्ड – 90:31/ 176:31 (= 02)

(१२) पादाकुलक– षिड्वषमेऽष्टौ समे कलसताश्च समे स्युनिर्रन्तराः।

जयधीरधर्मधारणधुरीण जय कामपूरणेकप्रवीण।
जय धरणिभारभञ्जनचरित्र जय परमरुचिगुणगणविचित्र।। ०१/४८/२६।।

दक्षिणखण्ड – 48:26-45 (= 20)

(१३) पुष्पिताग्रा - अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि तु नजो जरगाश्च पुष्पिताग्रा।

अयमहमिह संगतोऽस्मि दासस्तव रघुपुङ्गव साकमात्मवर्ग्यैः।
त्रिजगति किल चच्चिकीर्षितं ते द्रुततरमादिश तन्ममाद्व कर्तुम्।। ०१/१९७/३७।।

दक्षिणखण्ड - 197:37 (= 01)

(१४) पृथ्वी- जसौ जसयला वसुगृह-यतिश्च पृथ्वी गुरुः।

चलच्चरणनूपुरैर्ललित किङ्किणीनां गणै-
रनेकवलयैस्तथा विद्युत बाहुवल्लीस्थितैः।
अभूत् सततकाहलः किमपि तत्र कोलाहलः
सुवर्णमणिभूषणप्रकरसिञ्जितैर्मिश्रितः।। ०१/३४/१०।।

पूर्वखण्ड - 20:12/ 35:10/ 88:27/ 123:106 (= 04)

दक्षिणखण्ड - 32:100/ 45:58/ 49:58/ 72:35/ 127:3 (= 05)

(१५) प्रबोधिता or मञ्जुभाषिणी।- सजसा जगौ च यदि मञ्जुभाषिणी।

अत एष गुप्तबलवीर्यसंपदां निधिरुर्जितस्तव शिशुर्मनोहरः।
सुचिरं जयत्वखिललोकरञ्जनः कमलाविलासभवनायितव्रजः।। ०१/११३/१७१।।

पूर्वखण्ड-113:171/116:47/120:98/129:44-50/132:34-67/138:85-95 (=55)

दक्षिणखण्ड - 20:67, 68/ 33:2-24/ 87:39/ 99:29-31/ 226:29 (= 29)

(१५) प्रभावती or रुचिरा।- जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्गृहैः।

ततः सखी समुदयहेममालिका सुल्लसत्सुरुचिरमध्यरत्नभाः।
प्रकुर्वती प्रमुदवनं रुचाञ्चितं तदन्तिकं तरुणिवरा समाययौ।। ०१/१२७/०१।।

पूर्वखण्ड - 10:47-49/ 21:24, 52/ 90:9/ 94:37/ 127:1-10/ 130:48/ 138:129/ 141:29 (= 20)

दक्षिणखण्ड - 7:75/ 71:21 (= 02)

(१७) प्रमिताक्षरा– प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता।

अवलीढगाढपरिपाकलसन्नवलीमिद्घनवनरप्रतिमम्।
शवलीभक्तनुतडिद्धरहः कवलीकरोति घनजन्मतमः।। ०१/१२६/४०।।

पूर्वखण्ड – 126:40-81/ 145:71 (= 43)

(१८) **प्रहर्षिणी** - त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम्।

इत्येतद्व्रजरमणीगणेन सार्धं
यो विक्रीडितमनिशं शृणोति मर्त्यः।
पूतात्मा स निजजनिं कृतार्थयित्वा
चिल्लोके वसति सदा समुपैति रामभक्तिम्।। ०१/३८/३८।।

पूर्वखण्ड – 9:32/ 16:25-28/ 19:8,9/ 22:12/ 38:38/ 60:59/ 128:78 (= 11)

दक्षिणखण्ड – 20:69/ 21:57/ 22:34/ 26:66-70/ 29:47/ 37:31/ 41:29/ 64:27/ 67:55/ 68:47/ 69:43/ 167:16/ 174:31/ 189:31/ 199:41 (= 19)

(१९) **भुजङ्गप्रयातम्** - भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

नमस्ते नमस्ते सदा राम राम प्रसीद प्रसीदेश लक्ष्मीनिवास।
अननैव रूपेण नित्यं दृशोर्नः प्रपन्नार्तिहत् गोचरत्वं प्रयाहि।। ०१/५३/६६।।

पूर्वखण्ड – 53:66/ 60:38/ 65:34-36/ 107:170-177/ 115:47/ 120:92/ 121:102/ 138:59-63/ 139:44-49/ (= 27)

दक्षिणखण्ड – 58:1-15/ 73:34/ 90:32, 33 (= 18)

(२०) मन्दाक्रान्ता– मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।

मध्ये मध्ये कनकलतिका जातमालैस्तमालै–
र्मध्ये मध्ये वलुलिततडिन्मोदमानैः पयोदैः।
मध्ये मध्ये कनकमणीभा संगशीलैश्च नीलैः
प्राप्तुं शक्या नखलु रमणं राममासां विलासाः।। ०१/३५/१३।।

पूर्वखण्ड – 22:26/ 24:5/ 35:13/ 130:55/ 132:70/ 138:78/ 142:55/ 143:49 (= 08)

दक्षिणखण्ड - 25:65/ 126:45/ 129:19/ 198:26/ 200/12/ 204:45/ 209:83 (= 07)

(२१) मात्रासमक- षिह्मषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समो स्युनिर्रन्तराः।

सान्द्रक्षोणीरुहासु स्मर इव रतिमान् पञ्चवय्याः स्थलीषु।
श्रीमान् सीतासमेतः प्रतिदिनमकरोद् रामचन्द्रो विलासान्।। ०२/१४१/४०।।

पूर्वखण्ड - 19:12-16[5], 18[6] (= 06)

दक्षिणखण्ड - 141:40/ 168:14 (= 02)

(२२) मालिनी- ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

व्रजिनहरणदक्षा रामभक्तिप्रकाशा
कमलभवनिषेव्या वैष्णवत्वप्रदात्री।
तुलसिवनविशेषा मोदितीरान्तदेशा
प्रभवतु सरयूर्नः सर्वकल्याणकर्त्री।। ०१/६६/१८।।

पूर्वखण्ड - 22:40-43/ 24:13/ 66:18/ 67:4-18/ 83:24/ 88:26/ 94:12, 21, 22/ 98:163-166/ 99:26/ 120:146/ 124:18/ 126:21, 82, 83/ 128:52/ 136:40/ 140:102-105 (= 42)

दक्षिणखण्ड - 1:1-8, 46:29/ 65:22/ 66:11, 12/ 68:15/ 72:11-13/ 76:21/ 87:1-12/ 93:55-57, 74/ 97:61/ 114:55/ 127:4-16/ 133:33/ 134:22/ 138:10/ 140:39/ 142:37/ 158:41/ 161:24/ 165:17-24, 30/ 175:66/ 182:26, 27/ 188:31/ 192:33/ 193:34/ 208:48/ 215:50/ 217:43/ 233:28/ 241:33 (= 33)

(२३) यमुना-(= मालती) भवति नजावथ मालती जरौ।

स्मरत भजत नित्यमेनमेव प्रणयवशं रघुपङ्गव विशेषात्।
इति निखिलविलपत्कदम्बकेभ्यो भयरहिताः सततं प्रयात साम्यम्।। ०२/१२८/१३।।

दक्षिणखण्ड - 128:13 (= 01)

---

[5] vv. 11/12-16 मात्रासमक of 16.15.16.15.

[6] 19/18 contains 06 lines of मात्रासमक metre.

(२४) रथोद्धता– रात्परैर्नरलगै रथोद्धता।

नूनमेष पुरुषोत्तमोत्तमो यः परावरकजन्मनां परः।
तस्य नित्यसुविलाससंगिनी श्रीरसौ मधुरकोमलाकृतिः।। ०१/५३/४१।।

पूर्वखण्ड – 35:11, 12/ 53:41/ 118:41/ 119:87/ 133:61/ 141:30/ 142:54/ 146:117 (= 09)

दक्षिणखण्ड – 71:26, 27/ 122:24, 25/ 220:7(= 05)

(२५) वंशस्थ उपजाति–

वृन्दावनस्थं स्मितपीयूषवर्षैः
सिञ्चनमङ्गानि मृगीदृशां च।
राधान्वितं पीतदुकूलयुग्मं
दृष्ट्वा स तुष्टाव हृदि प्रसन्नः।। ०१/०५/२३।।

पूर्वखण्ड – 5:23/ 6:1-6, 8-11, 14/ 10:55, 56[7]/ 17:45/ 39:1, 2/ 49, 41 (= 19)

दक्षिणखण्ड – 3:54, 55/ 4:20, 35, 36, 45, 62, 84 / 5:23, 33, 41/ 6:106/ 7:14, 15, 64, 65/ 8:94, 101, 110, 120, 121/ 14:47, 48/ 15:54/ 17:23/ 19:62/ 20:48/ 23:41/ 25:57-59, 82/ 26:89/ 30:43/ 51:43/ 53:38, 45/ 56:34/ 60:29/ 61:30, 31, 35, 37/ 62:6/ 72:19, 36, 37/ 74:4/ 76:25/ 79:13-19, 21, 23, 24, 26/ 81:23/ 85:36-39/ 86:15, 29/ 87:16/ 88:35/ 95:47-56/ 105:25, 26/ 131:25 (= 82)

(२६) **वंशस्थविलम्** - वदन्ति वंशस्थलविलं जतौ जरौ।

स छत्रभृद्रत्नकिरीटशोभितः शुभाङ्गदोद्द्योतितबाहुविंशति।
सुरत्नमाली वरहेमवेष्टनो विभूषणाढ्यः शुशुभे दशाननः।। ०१/१०४/१८।।

दक्षिणखण्ड – 104:18, 20, 22-28/ 105:20, 22-24/ 107:33/ 115:22/ 117:28, 32/ 118:21/ 119:32, 33/ 120:6, 9/ 125:7/ 126:14, 26/ 131:33, 6, 8-20/ 134:19/ 142:12, 19-24/ 143:6, 7, 8, 9, 11/ 144: 37, 38/ 163:72/ 167:6/ 197:16, 17/ 202:39/ 205:27(= 61)

(२७) **वसन्ततिलका** - उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौगः।

हा नाथ हे रमण सुन्दरवर्यधुर्य
प्रेष्ठ प्रिय प्रियतम प्रणयामृताब्धे।
दासीं विहाय ननु मां निविडे नुकुञ्जे
क्वासीति दीनवचनैरनुनाथमाना।। ०१/३२२/५७।।

---

[7] 10:55, 56 contains 06 lines where 10:55ab forms one unit.

पूर्वखण्ड - 4:16/ 5:17, 19, 43/ 7:8/ 12:26/ 17:9-11/ 19:2, 3/ 20:2, 3/ 21:44, 45, 46/ 22:34-36/ 27:41, 42/ 31:1-50/ 321-4, 10-16, 19-26, 50-53, 57-58/ 34:19-27/ 35:16, 23, 26-32, 40-43, 63, 64/ 36:2-16, 18-20/ 37:4-27/ 38:37/ 39:5, 6/ 42:26, 27, 31/ 43:52, 53/ 49:34, 44-51/ 50:28, 29/ 52:24/ 53:44/ 55:7, 9/ 56:13/ 60:1, 9, 21, 22, 31, 35, 43/ 62:10, 11/ 63:26/ 64:8/ 65:7-12, 14-20, 27, 28/ 66:17, 40, 43/ 67:17/ 70:1-14/ 75:3, 4, 22/ 82:4, 6, 28/ 83:22/ 84:13/ 88:18-22, 24/ 91:10/ 93:28, 57/ 94:20/ 95:4-20, 22-49/ 96:61-64, 75, 76, 109-111/ 97:52/ 99:46, 47, 116, 117, 119-121, 123, 128/ 100:4, 5, 32-37, 54-70/ 101:33/ 102:41/ 105:48, 49, 110/ 106:72, 81, 82/ 109:12-17, 44-47, 201, 203, 213/ 110:87, 135-172, 241/ 113:51, 160/ 115: 1, 2, 6, 8, 29, 49-52/ 116:24, 42, 45/ 117:15, 48-52, 56/ 118:7-13, 28, 53, 54/ 121:36-40, 44/ 122:32, 36, 37/ 123:77, 78, 88, 90-95, 100/ 124:11, 12/ 127:64/ 130:26-29, 31, 52, 53, 184-186, 194, 211/ 133:29, 32, 52-54/ 134:75/ 135:8, 16, 23/ 136:17, 29/ 137:90-92, 101/ 138:106-112/ 139:23, 25[8]/ 140:21, 22, 57/ 141:101-116/ 142:53/ 145:79, 111, 141-143, 158(= 510).

दक्षिणखण्ड - 3:9, 50/ 4:16-30, 49, 56, 75/ 5:5/ 7:43, 63/ 8:6, 29, 36, 45, 98, 109, 111, 113/ 9:54, 55, 94, 135/ 11:1-15, 19/ 18:25, 26/ 22:14/ 24:68/ 25:56/ 49:57/ 50:14-19/ 51:9-13/ 51:51, 53/ 53:32, 39-42/ 55:16/ 59:37/ 61:10-14, 28, 29, 39/ 62:31/ 63:29/ 65:8, 23, 24/ 66:22/ 71:23, 24, 25, 28, 29/ 72:8/ 75:45/ 80:19/ 83:29/ 84:25/ 85:47/ 87:17/ 89:33-35/ 91:4, 5, 10, 16, 19/ 98:3-27/ 99:2/ 103:39-41/ 104:35/ 105:27/ 110:36/ 114:53, 54/ 123:25/ 128:22, 24/ 129:7/ 131:28/ 132:37/ 135:29/ 138:25/ 139:23-25/ 166:22/ 167:2-5/ 171:29/ 177:24, 26/ 178:1-25/ 182:13-24/ 186:45/ 192:1/ 207:31/ 210:28/ 211:37/ 212:31/ 219:39/ 220:22/ 225:57/ 234:22/ 239:2-5, 18-23, 34/ 240:31/ 241:34/ 243:37 (= 237).

(२८) वामोर्ती-

आस्वादार्थं रसराजस्य मातः श्रीरामेणा कारि योगो मया ते।
नो चेत्साक्षात्पूर्णपत्नी रमाख्या त्वं कस्य जायासि विना रमेशम्।। ०१/१२७/१११।।

पूर्वखण्ड - 6:7, 18/ 127:111, 112 (= 04)

दक्षिणखण्ड - 4:7(= 01)

(२९) वैतालीय **or** वियोगिनी - विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी।

[8] Ch. 01/139 has not given the number 24 but directly gives the No. 25.

अथ यान्यपतिस्पृहा स्त्रिया भुवने सा तु विनिन्दिता बुधैः।
इति चेतसि संविमृश्य वः स्वपतिः सेव्यतमः परः पुमान्।। ०१/१३०/२१।।

पूर्वखण्ड - 130:21, 22, 167/ 136:30 (= 04)

दक्षिणखण्ड - 13:86-89/ 20:66/ 25:62/ 72:15/ 113:44/ 146:58/ 188:2/ 195:29/ 242:27(= 12).

(३०) **शार्दूलविक्रीतम्** -सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

हे मातः सरयू त्रिलोकजननि क्षेमैकवारांनिधे
धाराभूषितभूतलेऽमलसुधाकासारिणी श्रीपतेः।
मज्जन्मानुषमुक्तिदे त्रिजगतीसौभाग्य संपत्प्रदे
सन्नीरे सरयू प्रसीद भवती गम्भीरंधीरद्रवे।। ०१/६६/१९।।

पूर्वखण्ड - 33:39/ 66:19/ 70:42/ 94:26-36/ 95:21/ 99:89/ 108:86, 87/ 110:113-118, 173, 235/ 113:224, 225, 248, 249/ 115:9-11/ 116:46/ 117:44, 45/ 119:85, 88/ 120:147/ 122:81-88/ 126:84, 87/ 127:51, 65. 128:49, 50/ 129:20/ 130:161, 162, 165, 166/ 134:100/ 141:84/ 142:49, 59-61 (= 64)

दक्षिणखण्ड - 3:48/ 4:50/ 14:49/ 17:54/ 25:44-46, 86/ 27:51/ 32:77/ 35:49/38:39/ 51:52/ 53:36/ 55:31, 32/ 61:19/ 66:13/ 76:4-19/ 78:27/ 83:30/ 92:52/ 94:46, 47/ 95:28/ 98:28, 30/ 100:37/ 106 (II):57/ 115:31/ 116:45/ 126:46/ 128:25/ 138:5-8/ 143:39/ 144:65/ 148:31/ 151:35/ 154:43/ 160:19/ 162:35/ 181:34/ 182:28/ 183:39/ 187:27/ 190:35/ 200:42/ 214:49/ 215:26, 27/ 220:55/ 231:21/ 238:34/ 241:35/ 242:2/ 245:21(= 74)

(३१) शालिनी- मत्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः।

यत्सौन्दर्यं क्वापि लोकेऽस्ति किंचित्
तद्युष्माकं कान्तिसारस्य लेशः।
नीचेदस्मिन् पञ्चभूतात्मकाङ्गे
क्वोत्कर्षः स्याच्छोकभूमावभव्ये।। ०१/५४/१३।।

पूर्वखण्ड - 5:12/ 34:67, 70, 73/ 50:7/ 54:13/ 55:5, 6/ 92:15-17/ 93:32/ 94:13, 37-57/ 95:50-54/ 96:79, 80/ 99:90/ 108:43-46, 48/ 121:42/ 122:57/ 127:53/ 128:28/ 130:59-61/ 134:19/ 135:15/ 137:109/ 145:76 (= 58)

दक्षिणखण्ड – 4:69/ 5:32/ 80:20/ 81:21, 22/ 82:20/ 93:71/ 94:54/ 102:41/ 115:13/ 122:26/ 125:15/ 126:8, 22/ 129:20/ 130:11, 27/ 136:1/ 144:58/ 146:59/ 152:39/ 161:41/ 168:12, 13/ 185:25/ 223:41/ 232:14/ 237:76 (= 28)

(३२) शिखरिणी– रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

घनस्तोमश्यामं विलसति महामञ्जुलतरं
तडित्स्वर्णं वर्णाधिकसुकमनीयं च किमिदम्।
अमुष्य श्रीरेषा परमपुरुषस्योत्तमपते–
र्गुणातीता काचित् परिलसतु सा चेतसि मम।। ०१/५३/३६।।

पूर्वखण्ड – 10:24/ 53:36, 37/ 127:49/ 130:212/ 134:20, 103, 104/ 145:80/ 146:98, 99 (= 11)

दक्षिणखण्ड – 4:32/ 8:114/ 34:192, 193/ 51:46-48/ 70:50, 51/ 76:26/ 77:53/ 99:4-28/ 118:14/ 122:28/ 126:10/ 134:30/ 188:32/ 191:33 (= 32)

(३३) स्रग्धरा - भ्रम्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितम्।

नानीतिर्नेतिवीतिर्यमकृतविपदां नापगीतिर्जनानां
नायासो न प्रवासो न धनविधुरता नानपत्यो न रुग्णः।। ०१/९०/०७।।

पूर्वखण्ड – 1:1-9/ 35:15/ 90:7/ 91:1-4/ 94:10/ 118:14/ 119:74, 77, 78, 89/ 121:96-98/ 127: 14, 68, 69/ 130:57, 174-180/ 132:71/ 134:21/ 135:76/ 145:89 (= 37)

दक्षिणखण्ड – 5:31/ 16:48/ 17:56/ 43:63/ 51:50/ 53:37/ 56:30/ 96:37, 38, 39/ 101:53/ 110:37/ 121:33/ 144:60/ 147:29/ 178:27/ 232:29/ 234:28/ 244:52 (= 19)

(३४) स्वागता– स्वागता रनभगैर्गुरुणाच।

वत्स राम भवतः प्रणयेन प्रायशो व्रजजनोऽस्ति निबद्धः।
अद्य का गतिरमुष्य भवित्री प्रेषिते त्वयि चिरात्कृतसङ्गे।। ०१/४०/२४।।

पूर्वखण्ड – 40:24-28/ 116:32, 44 (= 07)

दक्षिणखण्ड – 131:29/ 133:1-23(= 24)

(३५) हरिणलुप्ता– सयुजात्सललधूविषमे गुरुर्युजि नभौ भरकौ हरिणलुप्ता।

इति मुहुर्मुहरुक्तिशतेन मां स विनिबोध्य सखि त्वदुपान्तिकम्।
प्रियतमो विससर्ज विलग्नधीस्तवपदाम्बुजनूपुरकध्वनौ।। ०१/१२६/११२।।

पूर्वखण्ड – 126:112 (= 01)

दक्षिणखण्ड – 94:53, 57/ 142:36/ 171:28/ 182:10 (= 05)

(३६) हरिणी– नसमरसलाग: षड्वेधेर्हरिणी मता।

मरकतमर्णवर्ण: स्वर्णोचित: प्रतिभाति चेत्
कनकलतया योगो योग्यस्तमालतरोरपि।
अथ समुचिता हैमी रेखापि चेन्त्रिकषोपले
तदिह तव मत्सख्या सख्य स्तुतये नृणाम्।। ०१/१२१/४९।।

पूर्वखण्ड – 121:49/ 127:67 (= 02)

दक्षिणखण्ड – 51:49/ 167:33/ 179:51(= 03)

(३७) Prose:- 36:17/ 40:29/ 76:11-13, 23-26/ 94:14-17/ 107:166-169/ 126:1-4/ 130:83-91 (= 32).

– – – – –